International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-02-2026, Accepted: 16-03-2026, Published: 31-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 266-268

शोध पत्र का शीर्षकः अनुवाद अध्ययन की प्रवृत्तियाँ

एस स्वाती
शोधार्थी, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल, भारत

सारांश
अनुवाद मानव संस्कृति का मुख्य बिंदु होकर चल रहा है। इस भूमंडलीकृत दुनिया में अनुवाद के बिना भाषायी समुदाय सांस्कृतिक अलगाव में पड़ जाते हैं। अंग्रेज़ी को विश्व की भाषा कहने के बावजूद हम दुनिया के अन्य भाषाओं और संस्कृतियों की उपलब्धियों को अनदेखा नहीं कर सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय संपर्क, व्यापार की उन्नति और बढ़ाव, इंटरनेट का बढ़ते टेक्स्ट–अनुवाद इन सबके कारण अनुवाद और उसकी प्रक्रिया को समझने की आवश्यकता उभरकर आती है।
अनुवादक और दुभाषिए वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक आदान–प्रदान के लिए काम कर करे हैं।

मूल शब्दः अनुवाद, भाषायी समुदाय, अंतर्राष्ट्रीय संपर्क, व्यापार, सांस्कृतिक आदान–प्रदान

एक मानना है कि अनुवाद प्रक्रिया में रचनात्मक क्षमता की आवश्यकता नहीं होती है, इसके कारण साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद को अधीनस्थ प्रक्रिया मानते हैं। लेकिन अभी अनुवाद अध्ययन के व्यापक और अनेक रूप हैं और वह विद्वत्तापूर्ण गतिविधि काएक सुस्थापित क्षेत्र बन गया है। पहले इसे बेघर माने थे लेकिन बाद में वह अंतर अनुशासनिक क्षेत्र बन चुके है जो अपने साथी विषय क्षेत्रों के दृष्टिकोण से पूर्ण मान्यता प्राप्तएक स्वतंत्र विधा बन गया है जो अभी दूसरे विषय क्षेत्रों को भी अपना योगदान दे रहे हैं। इसके लिए बहुत अधिक बौद्धिक शक्ति समर्पित किया गया है। 20वीं सदी के बीच में ही अनुवाद और इंटरप्रेटेशन को विस्तार और व्यापकता मिल गया है लेकिन इसके शोध में अभी कुछ समय पहले ही ज़्यादा प्रधानता मिली है।

अनुवाद

अनुवादएक प्रक्रिया है जहाँ मौलिक पाठ (स्रोत पाठ) का स्थानांतरण किसी दूसरी पाठ (लक्ष्य पाठ) से हुआ है जो दूसरी भाषा में हैं।

सदियों से अनुवाद को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टियों में देखते हैं।

सकारात्मक दृष्टि यह है कि अनुवाद अन्य भाषायी समुदाय से नए विचार और अनुभव का पहुँच देते हैं। अन्य भाषा की बाधा के पीछे होनेवाले क्षितिज को खोलता है।

नकारात्मक दृष्टि यह है कि अनुवाद कभी भी 'असली चीज़' नहीं हो सकती है, वह सेकेंड हेंड होता है, मूल के लिए घटिया विकल्प।

जिन लोग सिर्फ अपनी मातृभाषा बोलते हैं, वे अनुवाद को सम्मान देते हैं क्योंकि अनुवाद भिन्न–भिन्न भाषाएँ, संस्कृति और समाज के बीच सेवा करते हैं।

अनुवाद बहुत समय से है। लेखन परंपरा का विस्तार और खोज, राष्ट्रीय भाषाएँ और राष्ट्रीय साहित्य का विकास, राष्ट्र की सीमाओं को पार किए ज्ञान, राजनैतिक शक्ति और प्रभाव के विस्तार के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण है।

अनुवाद बहुत सारे राजनयिक और वैज्ञानिक आदान–प्रदान के लिए सहायता दिए है। धार्मिक विस्तार और सांस्कृतिक मूल्यों का स्थानांतरण, शब्दकोशों के संकलन में सहायता दिए है।

साहित्य और अनुवाद अध्ययन

अनुवाद अध्ययन के संदर्भ में सिद्धांत और व्यवहार से संबंधित प्रश्नों का उद्भव हुआ है और भिन्न–भिन्न विषय क्षेत्रों में काम करने वाले कई विद्वानों से ज्ञानवर्धक जानकारियाँ भी मिली हैं। भाषा–विज्ञान, सांकेतिकता, सांस्कृतिक अध्ययन, साहित्यिक सिद्धांत, मनोविज्ञान आदि क्षेत्रों के विद्वान महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं।

हाल ही में अनुवाद सिद्धांत विद्वानों की अंतर्दृष्टि के संगम से विकसित हुआ है। सिद्धांत वह है जो भाषाई, साहित्यिक और सांस्कृतिक सिद्घांतों से सूचित और समृद्ध है।

हमारे रचनात्मक साहित्य का समझ और अनुवाद प्रक्रिया के ज़रिए साहित्य में रूपांतरण होते हैं।एक भाषा और संस्कृति से दूसरी भाषा और संस्कृति तक पहुंचाता है, यही तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के गहरा समझ और प्रशंसा का नेतृत्व करता है। 'अनूदित साहित्य' दुनिया के कई भाषा साहित्य काएक बड़ा भाग होते हैं।

साहित्यिक अनुवाद

साहित्यिक अनुवाद में अनुवाद ज्यादातर समीप बन सकते हैं। अर्थ में थोड़ा बदलाव आ सकते है, ज़्यादातर अर्थ नष्ट नहीं होते हैं, कभी–कभी अर्थ जुड़ जाते हैं।

अनुवाद करने के लिए सिर्फ एक ही पद्धति नहीं है।एक ही पाठ काएकाधिक अनुवाद मिलने से यह समझ आते हैं। अनुवाद करने के लिए और अनुवाद की आलोचना करने के लिए अनुवाद की सिद्धांतों की ढाँचा, नियम मिलते हैं। लेकिन यह भीएक विषय है क्या किसी अनुवाद करने के पीछे कोई कारण है, और किस विषय का अधिक अनुवाद होते हैं।

एक ही संस्कृति में पले बड़े दो लोगों के बीच संवाद करने में कठिनाई होती है, लेकिन वह कठिनाइ दो भिन्न संस्कृति और भाषा के लोगों के बीच की कठिनाई से कम ही होते हैं।

भारत में अनुवाद

संस्कृत से कई साहित्य असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी आदि भाषाओं में अनूदित है। भारत के पाठ मुगल काल में पेरशियन में अनुवाद किए है। अकबर के राज्य में चार साल में रामायण को पेरशियन में अनुवाद किए। शाहजहाँ का बेटा दाराशुकोह उपनिषद, भगवद गीता, योगवशिष्ठ और रामायण को पेरशियन में अनुवाद करवाए गए।

वारन हेस्टिंग्स (1772–1785) का विश्वास था कि हिंदू लोग को हिंदू नियमों से ही शासन करना है। उनके हाथ में भारतीयों द्वारा संस्कृत से पेरशियन में अनूदित धर्मशास्त्र था। उसे उन्होंने यूरोपियन्स से अंग्रेजी में अनुवादित किए थे। फोर्ट विल्लियम कॉलेज, कोलकत्ता में 1800 के समय में ईस्ट इंडिया कंपनी के लेखकों को हिंदी, उर्दू, बांगला, मराती आदि भाषाओं सिखाने के लिए अनुवाद का नीव डाला। संस्कृत, पाली , तमिल से ही नहीं बल्कि आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद का काम शुरू हुए थे।ऐसे कई सालों से अनुवाद हो रहे हैं, लेकिन हम रुककर उसपर विचार करना भूल गए।

पिछले 30 सालों में भाषा के अध्ययन में बहुत अधिक बदलाव हुए हैं।

- ऐतिहासिक से समकालीन
- नियमित से वर्णनात्मक
- सिद्धांत से अनुभव
- सूक्ष्म स्तरीय चिह्न से स्थूर स्तरीय पाठ

इन सबके विकास से 'भाषा उन्मुख अनुवाद सिद्धांत' का उद्भव हुआ है।

साहित्यिक अनुवाद के सिद्धांत सिर्फ लिखित रूप में उपलब्ध है लेकिन उसकी पढ़ाई नहीं होती और वस्तुतः अज्ञात है। ज्यादातर, अनुवाद का व्यावहारिक अभ्यास ही दिया जाता है।

अभी अनुवाद विषय पारंपरिक भाषिक विभाग में होते हैं, भिन्न–भिन्न भाषाओं का शिक्षण भिन्न–भिन्न विभागों में होते हैं। साहित्य और भाषा अलग–अलग शिक्षक पढ़ाते हैं, अनुवाद सिद्धांत जो साहित्यिक या भाषिक हो वह मुश्किल ही पता रहता है और अनुवाद प्रक्रिया व्यावहारिक भाषा शिक्षण में होते हैं।

भारत में साहित्यिक अनुवाद

1981 में कवि गण और साहित्यिक अनुवादक बैबिल को गुजराती में अनुवाद करने का काम लिए। इस अनुवाद का परिणाम यह हुआ कि उनको ईसाई धर्म को अपनाने का मौका मिला और हिंदू जाति के पदानुक्रम से बाहर आकर स्वयं को पुनर्परिभाषित करने का अवसर मिला। यह अनुवाद के इतिहास काएक महत्वपूर्ण क्षण था।

अनुवाद अध्ययन का भविष्य

दुनिया में भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के बीच में विचारों का आदान–प्रदान तभी संभव है जब भाषायी बाधाएँ और सांस्कृतिक अंतर को हम पार करें। अनुवाद के बिना दुनिया में अभी हो रहे ज्ञान का आदान–प्रदान संभव ही नहीं रहेगा। यहीएक कारण है कि पिछले 30 वर्षों में अनुवाद अध्ययन का उन्नति हुआ है।

अभी भीएक मुख्य बिंदु को पार करना है वही है पारंपरिक पूर्वाग्रह या पक्षपात जो बाहर से घेर लेता है। अनुवाद शब्दों का मामला नहीं है वह कुछ अवसरों में उस पाठ का है।

इन पूर्वाग्रहों को तोड़कर अनुवाद अध्ययन आजएक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हुआ है।

अनुवाद अध्ययन में समकालीन प्रवृतियाँ

वैश्विक अर्थव्यवस्था की उन्नति और तकनीकी विकास के परिणाम से साहित्यिक और तकनीकी दस्तावेज़ीकरण तेजी से बढ़ रहे हैं। मशीनी अनुवाद की क्षमता भी बढ़ती रही है। अनुवादक अभी मशीन अनुवाद का सहारा ले रहे हैं। इस समय पर कुछ अनुवाद तकनीकी लेखक बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं और कुछ तकनीकी लेखक अनुवादक बनने का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

वैश्वीकरण के तौर पर अंतरभाषी और अंतरसांस्कृतिक संवाद का महत्व बढ रहा है। इसी समय पर अनुवाद विज्ञान और अनुवाद अध्ययन भी नवीनता के मार्ग पर चढ़ रहे हैं। अनुवाद अध्ययन सिर्फएक भाषाई प्रक्रिया नहीं बल्कि समाज भाषाविज्ञान, सांस्कृतिक अध्ययन, सूचना प्रौद्योगिकी, मनोविज्ञान और दर्शन जैसे विज्ञान से संबंधित एक वैज्ञानिक दिशा बन गया है।

नई प्रवृत्तियाँ जैसे संज्ञानात्मक दृष्टिकोण, कार्पस भाषाविज्ञान आधारित विश्लेषण, लिंग दृष्टिकोण, व्यावहारिक और विचारशील दृष्टिकोण, इसके साथ मशीनी अनुवाद और न्यूरल मशीनी अनुवाद भी अनुवाद अध्ययन में प्रचलित हो रहे हैं।

अनुवाद, साहित्य सृजन काएक रूप है जिससे दूसरी भाषा में पाठ का पुनः निर्माण होता है। यह अंतर सांस्कृतिक संचार का महत्मपूर्ण स्वरूप है। मौलिक और पुनः निर्मित पाठ की प्रकृति के अनुसार अनुवाद को कलात्मक, वैज्ञानिक और अन्य प्रकार में विभाजन कर सकते हैं।

प्राचीन काल में विभिन्न जनजातियों के बीच संवाद करने के लिए अनुवाद का विकास होने लगे। वही है मौखिक रूप का अनुवाद, अंग्रेजी में इसे इंटरप्रेटेशन कहते हैं वह आज भी प्रचलित हैं।

भारतीय समाज काएक मुख्य तत्व है जाति व्यवस्था। इसके पदक्रम के कारण समाज में अछूत व्यवस्था, कन्या भ्रूण हत्या जैसे अनेक कुरीतियाँ प्रचलित हैं। कई अध्ययन हमें यह सूचना देते है कि हाशिए पर पड़े समुदाय दूसरे समुदाय से शोषित रहते थे। डॉ भीमराव अंबेडकर निम्न वर्ग के लोगों की उन्नति और हाशिए पर पड़े समुदाय के लिए खडे थे।

अल्पसंख्यंक संस्कृति का अनुवाद

अनुवाद, भाषाओं के बीच आंदोलन का हस्तक्षेप ही नहीं है बल्कि विभिन्न संदर्भों और संस्कृतियों के बीच का भी है।

अनुवाद अध्ययन में 'सांस्कृतिक मोड़ 'एक तत्त्व है, अनुवादक संस्कृतियों को आकार देने के लिएएक मध्यस्थ होता है।

हिंदी दलित लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' का अंग्रेज़ी अनुवाद है–श्रववजींद रू। क्ंसपजे' सपमि (जूठन रूए दलित्स लैफ)। यह माना गया कि इस अंग्रेज़ी शीर्षक से पूरे भारत में इस किताब का तत्व और लेखक का पहचान भी मालूम पड़ता है। उनका सरनाम वाल्मिकि से लेखक को अछूत समझा जाता , विशेषकर उत्तर भारत में। लेकिन विदेश के लेखकों के लिए इसका नाम "श्रववजींदरू।द नदजवनबींइसमे' सपमि" बना दिया। क्योंकि जूठन और दलित दोनों शब्द दोनों शब्द विदेशों के लिए अपरिचित है। दलित, स्वयं उन लोगों द्वारा चयनित पद है उसे साहित्यिक अनुवाद में तुरंत प्रयोग नहीं कर सकते है। दलित बोलने से यह तात्पर्य है कि वे लोग बहुत शोषित है। दलित शब्द अनाजों को कुचलने की प्रक्रिया के लिए उपयोग किया जाता है। इससे मतलब है उन लोग भी कुचले जाते थे।

दलित और जूठन शब्द का अंग्रेज़ी समानार्थी नहीं है इसलिए लेखक शीर्षक में इन शब्दों का उपयोग करके भूमिका में इनको विस्तृत किए हैं।

एक दलित लेखक सामाजिक कार्यकर्ता माना जाता है तो उसकी रचना का अनुवाद करने वाला अनुवादक भीएक सामजिक कार्यकर्ता है।

एक दलित लेखक द्वारा निर्मित साहित्य गैर–दलित लेखक द्वारा लिखित लेखन से दुगुना शक्तिशाली और प्रभावित होता है। एक अनुवादक समानांतर शब्दों और अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं फिर भी वह चुनौतिपूर्ण होता है क्योंकि वह बाधाओं और सीमाओं को पार करके उस पाठ को बाहर लेकर आते हैं।

अनुवाद अध्ययन में आज के समय में हाशिए वर्ग के अनुवाद ज्यादा प्रचलित चल रहा है। अनुवाद सिर्फ भाषा का स्थानांतरण

नहीं है बल्कि वह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक उददेश्य रखने वालेएक राजनैतिक क्रिया है है।

दलित लेखन, साहित्य कीएक शाखा अत्यधिक स्वागत मिलाएक विषय है। भारत में इस विमर्श संबंधी अधिक मात्रा से अनुवाद हो रहे हैं। यह लेखन हाशिए वर्ग के पहचान और अस्तित्व का दावा करता है। पुराने भारतीय सौंदर्य शास्त्र दलितों को साहित्य और भाषा से भी अछूत मानते हैं। दलित विमर्श एक गैर दलित के लिए असामान्य और अनोखा होता है। अनुवाद के समय उनके पहचान का प्रश्न सामने आता है। पारंपरिक साहित्य लेखन में दलित के लिए जगह नहीं दिया। सबलटेर्न विमर्श यानि हाशिए पर पड़े वर्गों का विमर्श के अंतर्गत साहित्य क्रिया में दलित साहित्य दलितों की सामाजिक स्थितियों का वर्णन करता है और उनमें साहित्यिक अभ्यास पैदा करता है।

जबएक पाठ का अनुवाद होता है तब अनुवादक अपनी भाषा को सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत योग्य बनाता है जो मौलिक दलित साहित्य कृति के प्रभाव को कम करता है।

सबाल्टेर्न साहित्य भारतीय और विदेश लेखकों द्वारा सृजित विमर्श है जो हाशिए पर पड़े वर्ग जैसे दलित, आदिवासी और अन्य दमित वर्ग, उन पर है।

पिछले दो दशक के भारतीय साहित्य का इतिहास सबाल्टर्न समुदाय का साहित्यिक प्रतिनिधित्व में बहुत प्रधान है। दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य, अल्पसंख्यंक सामुदायिक अध्ययन आदि साहित्यिक और सांस्कृतिक विषय के नई क्षेत्र बन गए है।

सबाल्टर्न साहित्य का दो भाग है–पहला स्वयं हाशिए पर पड़े लोग लिखते हैं दूसरे लोग अपने कल्पना या अनुभव से लिखते हैं।

मुलकराज आनंद, राजाराव और आर. के. नारायण आदि भारतीय अंग्रेजी लेखक सबाल्टर्न जीवन और उनकी समस्याओं को मुख्य धारा के साथ ही लिखे थे। हिंदी में ओमप्रकाश वाल्मीकि और बांगला में महाश्वेता देवी अपनी साहित्यिक कृतियों में सबाल्टर्न के जीवन का वर्णन किए हैं।

अनुवादक की भूमिका

अनुवाद में अनुवादक की मुख्य भूमिका होती है। सबलटर्न पाठ और उसके अनुवाद में गायत्री चक्रबर्ती स्पिवक का महत्वपूर्ण भूमिका है। महाश्वेता देवी का उनका अंग्रेज़ी अनुवाद सबलटर्न अध्ययन, उत्तर आधुनिक अध्ययन, अल्पसंख्यक अध्ययन, लिंग अध्ययन और मुख्य रूप में अनुवाद अध्ययन का नया द्वार ही खोलता है। जेंडर और दलित विमर्श संबंधी अनेक अनुवाद मराती, तमिल, हिंदी, कन्नड, मलयालम, तेलुगु आदि भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में हो चुके हैं।

सबलटर्न पाठ के संदर्भ में मौलिक पाठ और लेखक से गहरा संबंध अनुवादक का जरूर रहता है। इन स्थितियों में अनुवादक शोषित वर्गों की संवेदनाएँ, हाशिए पर पड़े समुदाय के उददेश्य, स्थिति और इतिहास से प्रेरित है।ऐसी स्थितियों मेंएक अनवादक अनुवाद नहीं पुनर्सृजन करने पर लगता है और अपनी रचनात्मक स्वतंत्रता लेकर अभिव्यक्तियों को स्वयं बदलता है।

उपसंहार

अनुवादक शब्दों का अनुवाद करता है। लेकिन जब वह पूर्ण रूप से मौलिक कृति को आत्मसात करता है तब वह अपने मन से अभिव्यक्त करता है। वह तभी संभव है जब मौलिक कृति में शब्दों की कठिनाई और जटिलता से ज़्यादा भावनाएँ और संवेदनाएँ स्थापित होती है। बहुभाषायी दुनिया में अनुवादक महत्वपूर्ण कार्य करते है। लोगों का मेल जोल, विचारों का आदान–प्रदान अनुवाद से सक्षम हो रहे हैं।

अनुवादक हैएक साधक।
वे भी समाज–सुधारक।
बनाते हैं साहित्य को अत्यधिक लाभ दायक।
भाषा नहीं है बाधक।
जब अनुवादक हो सहायक।

References

1. Malmkjaer K, Windle K, editors. The Oxford handbook of translation studies, 2011.
2. House J. Translation - The Basics, 2018.
3. Gupta RS. Literary Translation, 1999.
4. Nair RB. Translation, text and theory. 2002.
5. Snell Hornby M. Translation Studies - An integrated approach. 1988/1995.
6. Wakabayashi J, Kothari R. Decentering Translation Studies- India and Beyond, 2009.
7. Rani S. Contemporary trends in Translation Studies. Veda's journal of English language and literature,2017:4(Special issue 1).
8. Modern trends in development of translation studies. Spanish journal of innovation and integrity, 2025, 41.
9. Translating Minoritized Cultures: Issues of class, caste and gender. Postcolonial text, 2006, 2(3).
10. Nair V. Who can translate dalit discourses? International journal of English literature and social sciences, 2021, 6(4).